महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

अंक-१९

जनवरी-मार्च २०२४

विक्रमी संवत् २०८०-८१

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री नायब सिंह सैनी
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्रीमती सीमा त्रिखा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

प्रो. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

ई-मेल – publication@mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

mvsu.ac.in

सम्पादकीयम्

भारतीय सामाजिक-राष्ट्रीय-पारिवारिक जीवनस्यधारो वर्तते रामायणम् । महर्षि वाल्मीकिना विरचितं रामायणे भारतीय संस्कृते: आदर्श जीवनमूल्यानां समाहारो विद्यते । राम भारतीय संस्कृतेरात्मा अस्ति । तस्य जीवनं भगवद्जीवन अस्ति अतैव भारतीय समाजे श्रीराम भगवान राम इति रूपे पूज्यते । प्रभु श्री राम भारतस्य आत्मा अस्ति । श्री रामस्य जीवने ये-ये आदर्शासन् ते सर्वे आदर्शा: भारतीय जीवन मूल्यस्य प्राणभूता: सन्ति ।

श्रीरामस्य जीवनं वर्तमानसन्दर्भे यदि वयं पश्याम: चेत् भारतीय समाजे प्रत्येकस्मिन् क्षेत्रे श्रीरामेण स्थापितानि जीवनंमूल्यानि दरीदृश्यन्ते । सामाजिकजीवने वयं पश्याम: यत् प्राणिमात्रस्य कल्याण भावना भारतीय समाजे निगदितो वर्तते । राष्ट्रीय जीवने वयं पश्याम: चेत् राष्ट्रं सर्वोपरि इति भावना समाजे स्थापितो वर्तते । राष्ट्रं प्रति स्व-दायित्वं वयं स्वीकुर्म: तदाधारे एव भारतीय राष्ट्रीय जीवनं स्यात् इति वयं प्रयासपूर्वकं मनसि निधाय कार्यं कुर्म: । परिवारिक जीवने वयं पश्याम: चेत् श्री राम: अस्माकं आदर्श रूपे समक्षे दृश्यते । पुत्रस्य किं कर्त्तव्यमस्ति ? भ्रातृरूपे अस्माकं किं कर्तव्यम् ? भार्यारूपे अस्माकं किं दायित्वमिति सर्वे पारिवारिक जीवनस्य जीवन मूल्यं अस्माकं समक्षं वर्तते ।

आदर्श राज्य व्यवस्था कथं भवेत् इत्यपि श्री रामस्य जीवनं शिक्षयति । रामराज्यं स्थापितं भवेत इति कल्पना वयं कुर्म: । रामराज्यं अर्थात् एका आदर्श राज्य व्यवस्था यत्र कोऽपि शोषितो न भवेत् कोऽपि दरिद्रो न भवेत्, सर्वे सुखिन: सन्तु यत्र । लोक कल्याणमेव राज्ञ: प्रमुख धर्म स्यात् । श्री राम कथयति -

स्नेह च दयां च सौख्यं च यदिवा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकानां मुञ्जते नास्ति में व्यथा ।।

एतावत् जीवन राज्ञ: जीवन भवतु इत्येव रामराज्यस्य कल्पना वर्तते । यत्र **'सबका साथ, सबका विकास तथा च सबका विश्वास** इति आदर्शो स्यात् तत्र रामराज्यस्य स्वरूपं दृश्यते । यदा संगच्छध्वं संवदध्वं सं वोमनांसि जानताम् इति भावना निस्सरति तत्र रामराज्यं दृश्यते । यत्र- सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: इति भावना प्रसरति तत्र भवति रामराज्यम् ।

रामस्य जीवनं अस्माकं जीवने एतावत् प्रेरणा ददाति भारतीय दर्शनस्य समग्ररुपेण यदि यत्र कुत्रापि दर्शनं भवति तदस्ति श्री रामस्य जीवनम् । श्री राम न केवलम् भारतीयनाम् आदर्शोऽस्ति अपितु समग्रेऽस्मिन् सृष्टे: आदर्श: आधारश्च वर्तते । विश्वेऽस्मिन यत्र एकत: स्वार्थपूर्ण जीवनं दृश्यते तत्रैव अपरत: भारतीय जीवनमूल्यं यत्र वसुधैव कुटुम्बकम् इति भावना ढ़ीभूता अस्ति । मानवीय मूल्ययुक्ता भारतीय जीवन रचना विश्व क्लयाणाय वर्तते । भारतीय जीवन-दर्शनमेव मानवीय मूल्यानां रक्षणं कुर्तुम् समर्थोऽस्ति । यतोहि अस्मिन् श्रीरामस्य आदर्श परम्परा सन्निहितमस्ति। भारतीय संस्कृति: तस्य मूर्तिमान स्वरूपमस्ति ।

सम्पादक:

नए सत्रारम्भ के अवसर पर संस्कृत विश्वविद्यालय में हवन

दिनांक 15 जनवरी 2024 को विश्वविद्यालय के टीक परिसर में नए सत्र का प्रारम्भ मकर संक्रान्ति के अवसर पर किया गया। विश्व शान्ति की प्रार्थना करते हुए वैदिक विधि-विधान से हवन का आयोजन किया गया। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी ने यज्ञ कुण्ड में आहुति प्रदान की और विश्वविद्यालय में नए सत्रारम्भ का मंगलाचरण किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठातागण, आचार्यगण, शोधच्छात्रगण, विद्यार्थीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

"भारतीय संस्कृति के आधारः महर्षि वाल्मीकि के राम" विषय पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 20 जनवरी 2024 को विश्वविद्यालय के महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ द्वारा "भारतीय संस्कृति के आधार: महर्षि वाल्मीकि के राम" विषय पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कैथल के बौद्धिक वर्ग के बीच संवाद किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. प्रीतम सिंह (सह-निदेशक, डॉ. भीमराव अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) श्री श्याम बंसल (वरिष्ठ समाजसेवी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संघचालक), श्री रविभूषण गर्ग (वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं समाजसेवी), एवं अध्यक्ष रूप में माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय द्वारा राम मन्दिर की स्थापना के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम

दिनांक 22 जनवरी 2023 को विश्वविद्यालय के टीक परिसर में अयोध्या में हो रहे भगवान श्री राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लाइव देखा एवं वेदमन्त्रों के साथ हवन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने विश्व शान्ति की प्रार्थना की और राम नाम की आहुति प्रदान की। हवन से पूर्व सभी ने अयोध्या में हो रहे भगवान श्री राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा का लाइव प्रसारण ऑनलाइन माध्यम से देखा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कर्मचारियों सहित शोधच्छात्रों ने भगवान राम को आहुति प्रदान की और प्रसाद वितरण भी किया गया।

संस्कृत विश्वविद्यालय में मनाया गया गणतन्त्र दिवस

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल के टीक परिसर में 26 जनवरी 2024 को गणतन्त्र दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने ध्वजारोहण कर राष्ट्रीय गर्व के प्रतीक तिरंगा ध्वज को सलामी दी और समस्त अधिष्ठातागणों, प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधच्छात्रों सहित मिलकर राष्ट्रगान किया।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित
द्वितीय वार्षिक खेल प्रतियोगिताएं

दिनांक 1 मार्च 2024 महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल के टीक परिसर में विश्वविद्यालय स्तरीय द्वितीय वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता में लगभग 10 खेल आयोजित किए गए जिसमें दौड़, लम्बी कूद, ऊंची कूद, गोला फेंक, रिले रेस रहे । कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने सर्वप्रथम झण्डारोहण कर खेलों के लिए हरी झण्डी दी एवं मुख्य अतिथि प्रो. यशवीर सिंह (अध्यक्ष, धर्मशास्त्र विभाग), श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय ने खेल प्रतियोगिताओं को प्रारम्भ करने की घोषणा की।

छात्र वर्ग में 1500 एवं 800 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में अभिषेक (योग विभाग) प्रथम स्थान, भानु (वेद विभाग) द्वितीय तथा मोहित (योग विभाग) तृतीय स्थान पर रहे। **400 मीटर वर्ग** में अभिषेक (योग विभाग) प्रथम, जितेन्द्र द्वितीय एवं सन्दीप शर्मा तृतीय स्थान पर रहे। **छात्रा वर्ग में 400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता** माफी (व्याकरण विभाग) प्रथम, प्रियंका (योग विभाग) द्वितीय तथा मीना (दर्शन विभाग) तृतीय स्थान तथा **200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता** में प्रियंका (योग विभाग) प्रथम, मनीषा (ज्योतिष विभाग) द्वितीय और मीना (दर्शन विभाग) तृतीय स्थान पर रही। **लम्बी कूद प्रतियोगिता** में **छात्र वर्ग** में भरत शर्मा (वेद विभाग) प्रथम, मुकुल शर्मा (ज्योतिष विभाग) द्वितीय तथा सन्दीप शर्मा (योग विभाग) तृतीय स्थान पर रहे तथा **छात्रा वर्ग** में ज्योति (हिन्दू अध्ययन विभाग) प्रथम, माफी (व्याकरण विभाग) द्वितीय एवं प्रियंका (योग विभाग) तृतीय स्थान पर रही। **ऊंची कूद प्रतियोगिता** में **छात्र वर्ग** में अमित (साहित्य विभाग) प्रथम, मोहित (योग विभाग) द्वितीय एवं राहुल शर्मा (ज्योतिष विभाग) तृतीय स्थान पर रहे। तथा **छात्रा वर्ग** में प्रियंका (योग विभाग) प्रथम, पूजा रानी (व्याकरण विभाग) द्वितीय तथा माफी (व्याकरण विभाग) एवं मानसी (धर्मशास्त्र विभाग) ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। **गोला फेंक प्रतियोगिता** में **छात्र वर्ग** में राहुल शर्मा (ज्योतिष विभाग) प्रथम, रवि (दर्शन विभाग) द्वितीय तथा मुकुल शर्मा (ज्योतिष विभाग) तृतीय स्थान प्राप्त किया। तथा **छात्रा वर्ग** से गीता रानी (साहित्य विभाग) प्रथम, कमलेश (योग विभाग) द्वितीय स्थान तथा मीना (दर्शन विभाग) तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अलग-अलग प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति एवं मुख्य अतिथि महोदय द्वारा मेडल, प्रमाणपत्र एवं प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष, समस्त विभागाध्यक्ष, शैक्षणिक सदस्य, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया।

संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आदि गुरु शंकराचार्य पर व्याख्यानमाला कार्यक्रम

दिनांक 15 मार्च 2024 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल एवं भारतीय भाषा समिति के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के टीक परिसर में "भारत की सांस्कृतिक एकात्मता में शंकराचार्य का योगदान" विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में **मुख्य वक्ता डॉ. चितरंजन दयाल कौशल,** (निदेशक, हरियाणा साहित्य संस्कृति अकादमी संस्कृत प्रकोष्ठ), मुख्य अतिथि **महामण्डलेश्वर स्वामी विरागानन्द गिरि** जी अध्यक्ष विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे (विभागाध्यक्ष, हिन्दू अध्ययन विभाग) तथा मंच संचालन डॉ. नवीन शर्मा (सहायक आचार्य ज्योतिष) ने किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने कहा कि भारत के विश्वगुरु की परिकल्पना में आदि शंकर का योगदान महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महामण्डलेश्वर स्वामी विरागानन्द जी ने आदि शंकराचार्य के जीवन दर्शन को बताया और आशीर्वचन प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भारद्वाज ने कहा कि एक समय में जब भारत वैचारिक रूप से विभिन्न सम्प्रदायों में बंटा गया था तब सभी सम्प्रदायों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए आदि गुरु शंकराचार्य ने अद्वैत मत को स्थापित किया। कार्यक्रम में डॉ. संजय गोयल (प्राचार्य, आर.के.एस.डी. कॉलेज) सहित विश्वविद्यालय के, संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, गैर शैक्षणिक अधिकारी एवं कर्मचारी, विद्यार्थी सहित कैथल के गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

राज्यीय योगासन प्रतियोगिता में संस्कृत विश्वविद्यालय ने किया अद्वितीय प्रदर्शन

दिनांक 15-17 मार्च को हरियाणा उच्चतर शिक्षा विभाग की राज्य स्तरीय योगासन प्रतियोगिता का आयोजन राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, सेक्टर -14 पंचकुला में किया गया। इस प्रतियोगिता में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के योग विभाग की पुरुष और महिला वर्ग की टीमों ने भाग लिया, जिसमें पुरुष टीम प्रथम एवं महिला टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा **'सर्वश्रेष्ठ योगी का पुरस्कार'** पुरुष टीम के भविष्य ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता का उद्घाटन के अवसर पर श्री विनीत गर्ग (IAS), अतिरिक्त सचिव, हरियाणा उच्चतर शिक्षा विभाग व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के अवसर पर मुख्यातिथि श्रीमती ममता सौदा, सहायक पुलिस आयुक्त रही। कुलपति प्रो रमेश चन्द्र भारद्वाज ने टीम प्रबन्धक डॉ देवेन्द्र सिंह व पुरुष वर्ग के खिलाड़ी भविष्य, गीतांशु, विष्णु, आसिफ़, नितिन, बीरबल एवं महिला वर्ग के खिलाड़ी प्रियंका, पूजा, ज्योति, सीमा व निशा को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थीयों ने 48वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में जीते पदक

दिनांक 19-23 मार्च 2024 को पश्चिम बंगाल योग एसोसिएशन द्वारा आयोजित 48वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय योग खेल चैंपियनशिप 2023-24 में विश्वविद्यालय के योग विभाग के छात्र भविष्य (शास्त्री योग प्रथम वर्ष)ने तीन अलग-अलग प्रतिस्पर्धाओं में स्वर्ण, रजत, कास्य पदक जीता। गीतांशु (शास्त्री योगा तृतीय वर्ष) ने तीन प्रतिस्पर्धाओं में दो रजत व एक कास्य पदक एवं राम गोस्वामी (आचार्य योगा प्रथम वर्ष) ने स्वर्ण पदक जीत विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया। छात्रों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त उपलब्धि के लिए माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने पदक विजेता छात्रों व मार्गदर्शक डॉ. देवेन्द्र सिंह को हार्दिक शुभकामनाएं दी।

योगवासिष्ठ में कर्म स्वरूप

यो यो यथा प्रयतते स स तत्तत्फलेकभाक् ।
न तु तूष्णीं स्थितेनेह केनचित्प्राप्यते फलम् ॥

शुभेन पुरुषार्थेन शुभमासाद्यते फलम् ।
अशुभेनाऽशुभं राम मतेच्छसि तथा कुरु ॥

अर्थप्रापककार्यैकप्रयत्नपरता बुधैः ।
प्रोक्ता पौरुषशब्देन सर्वमासाद्यतेऽनया ॥

देशाद्देशान्तरप्राप्तिर्हस्तस्य द्रव्यधारणम् ।
व्यापारश्च तथाऽङ्गानां पौरुषेण न दैवतः ॥

पौरुषेण जिता दैत्याः स्थापिता भुवनक्रियाः ।
रचितानि जगन्तीह विष्णुना न च दैवतः ॥

जो पुरुष जैसा प्रयत्न करता है, वह वैसा ही फल प्राप्त करता है इस लोक में जो हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठा रहता है, उसे कुछ भी फल नहीं मिलता है। हे राम ! शुभ पुरुषार्थ से शुभफल मिलता है और अशुभ पुरुषार्थ से अशुभ फल मिलता है, तुम्हें जैसे फल की अभिलाषा हो वैसे पुरुषार्थ का अवलम्बन कर उस फल के भागी बनो। अपने अभीष्ट को प्राप्त करने वाली कार्यमात्र तत्परता को विद्वान् लोग पौरुष कहते हैं, उसी प्रयत्न तत्परता से सब कुछ प्राप्त किया जाता है। एक स्थान से दूसरे स्थान की प्राप्ति पैरों के पुरुषार्थ से होती है, किसी वस्तु को पकड़ना हाथ के पौरुष से होता है और इसी प्रकार अन्य अङ्गों के अन्य चेष्टाएँ पौरुष से ही होती हैं, दैव से नहीं।भगवान् श्रीविष्णु ने पौरुष से ही दैत्यों के ऊपर विजय प्राप्त की पौरुष से ही लोकों की क्रियाएँ नियत की और पौरुष से ही लोकों की रचना की, दैव से नहीं।

जगति पुरुषकारकारणेऽस्मिन् कुरु रघुनाथ !
चिरं तथा प्रयत्नम् ।

व्रजसि तरुसरीसृपाभिधानां सुभग !
यथा न दशामशङ्क एव ॥

ह्यस्तनी दुष्क्रयाऽभ्येति शोभां सत्क्रियया यथा ।
अद्यैवं प्राक्तनी तस्माद्यत्नात्सत्कार्यवान्भवेत् ॥

विश्वामित्रेण मुनिना देवमुत्सृज्य दूरतः ।
पौरुषेणैव सम्प्राप्तं ब्राह्मण्यं राम नाऽन्यथा ॥

उत्साद्य देवसंघातं चिक्रुस्त्रिभुवनोदरे ।
पौरुषेणैव यत्नेन साम्राज्यं दानवेश्वराः ॥

भरणादानसंरम्भविभ्रमश्रमभूमिषु ।
शक्तता दृश्यते राम न दैवस्योषधेरिव ॥

हे रघुनाथ ! इस जगत् में केवल पुरुषकार प्रयत्न ही पुरुषार्थ की साधना है। यहाँ आप चिरकाल तक वैसा पौरुष करें कि हे सौम्य ! जिससे आप वृक्ष, सर्प आदि योनियों को प्राप्त न करें। जैसे अतीत काल के दुष्कर्म वर्तमान काल के शुभ कर्मों से शोभित होते हैं, वैसे ही पूर्वजन्म के दुष्कर्म शुभ कर्मों से शुभफलप्रद हो जाते हैं, इसलिए पुरुष को प्रयत्न-पूर्वक उद्योगी होना चाहिए। हे राम ! देखो, महामुनि श्री विश्वामित्र जी ने दैव को दूर फेंककर पौरुष के बल पर ही ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया, अन्य उपाय से नहीं । हरिण्यकशिपु आदि दैत्यराजों ने अपने पुरुषकार के बल से ही देवताओं का विनाश कर तीनों भुवनों का साम्राज्य प्राप्त किया था।

ज्योतिषाचार्य
डॉ नवीन शर्मा
सहायक आचार्य ज्योतिष विभाग

मेरा गांव नैना

मेरा गाँव नैना हरियाणा प्रदेश के जिला कैथल में स्थित है। मेरा गाँव कैथल-करनाल मार्ग से होते हुए लगभग 15 कि. मी. एवं कैथल-कुरुक्षेत्र मार्ग से लगभग 17 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यह गाँव करनाल व कुरुक्षेत्र जाने वाले दोनों मुख्य मार्गों को जोड़ने का कार्य भी करता है।

जनसंख्या- हमारा गाँव जिले की तहसील का एक बड़ा गाँव है जिसमें कुल 683 परिवार रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, गाँव की जनसंख्या 3400 है, जिसमें 1811 पुरुष, 1589 महिलाएँ व 0-6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या लगभग 434 है, जो गाँव की कुल जनसंख्या का 12.76% है। गांव का औसत लिंग अनुपात 877 है। 2011 में गाँव की साक्षरता दर 68.00% थी, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 79.63% है व महिला साक्षरता दर 55.18% थी। गाँव में सभी जाति एवं धर्म के लोग रहते हैं।

कृषि व सिंचाई - गाँव के पास कुल 4500 एकड़ कृषि योग्य भूमि है। अधिकांश लोग अपने जीवन-यापन के लिए खेती करते है। वे विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते है। जिनमें से दो प्रमुख उगाई जाने वाली फसलें गेहूं और चावल है। खेतों की सिचाईं गाँव से होकर निकलने वाली सिरसा ब्रांच की नहर व ट्यूवेल इत्यादि के माध्यम से की जाती है। गाँव में भैस, गाय आदि घरेलू पशु भी है।

शिक्षा - गाँव में दो सरकारी विद्यालय हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालय प्रथम से पाँचवी कक्षा के लिए व राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छठी से बारहवीं कक्षा के लिए है। गाँव से मात्र 8 कि.मी. की दूरी पर वर्ष 2018 में हरियाणा सरकार द्वारा स्थापित प्रदेश का एकमात्र संस्कृत विश्वविद्यालय का अस्थाई परिसर कैथल-कुरुक्षेत्र मार्ग पर टीक गाँव के समीप है। जिसमें शास्त्री, आचार्य डिप्लोमा के अध्ययन हेतु छात्र आते हैं। इस विश्वविद्यालय में हमारे गाँव से भी अनेक छात्रगण अध्ययन हेतु जाते हैं।

प्रसिद्ध व्यक्ति –गाँव के लोग शिक्षा के प्रति जागरुक हैं जिसका परिणाम यह है कि गांव के अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति ऐसे हैं जो राज्य सरकार के साथ-साथ केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों में सेवाएँ दे चुके है और वर्तमान में कार्यरत भी हैं। जिनमें फौज में शहीद सिपाही हरिचन्द नैन, सेवानिवृत सुबेदार श्री मिंया प्रजापत, सुबेदार श्री रत्न सिंह नैन, सुबेदार श्री जरनैल नैन, सुबेदार श्री बलजीत नैन, श्री रत्न सिंह नैन तथा शिक्षा क्षेत्र से सेवानिवृत अध्यापक श्री दलीप नैन, श्री हरिचन्द्र नैन, श्री रूपचन्द नैन, श्री रामचन्द्र नैन, श्री चुड़िया राम नैन, श्री विद्यानन्द नैन व श्री सुखविन्द्र नैन, अनिल गर्ग, दलबीर नैन, गुलाब नैन, अमरीक नैन, सुरजमल नैन वर्तमान में कार्यरत हैं। इसके साथ-साथ श्री कर्मसिंह नैन (DTC), श्री रतना नैन (SDO Agriculture Dept.), कार्यरत रहे व श्री अंकुश नैन (C.G.C), श्री सतीश नैन (SDO), श्री रजत गर्ग (HCS), श्री दीपक नैन (SDO), श्री अशोक नैन (ASO), श्री राजेन्द्र (ETO), श्री राजेश नैन (ITBP-SI), श्री सुरज कुमार (SI), श्री सुशील कुमार (ALM), श्री अनिल कुमार (ALM), श्री दीपू प्रजापत (MPHW), श्री वजीर प्रजापत (MPHW), श्री दर्शन नैन आदि वर्तमान में विभिन्न विभागों में सेवाएं दे रहे हैं।

धार्मिक स्थल - गाँव में माता शेरावालीं मंदिर, शिव मंदिर, गांव के दूसरी ओर बसंती माता व फलुमदे माता मंदिर, दादा खेड़ा, डेरा ब्रह्मनाथ, गुरु रविदास मन्दिर, भगवान वाल्मीकि मन्दिर व पीर बाबा जैसे धार्मिक स्थल हैं, जहाँ ग्रामीण पूजा-अर्चना करते हैं।

सार्वजनिक सुविधाएं - गाँव में पशु चिकित्सा केन्द्र, बच्चों के खेलने के लिए स्टेडियम, सार्वजनिक कार्यों एवं विवाहोत्सव इत्यादि हेतु धर्मशाला, डाकघर, सामुदायिक केन्द्र उपलब्ध है। इन सुविधाओं का लाभ सभी ग्रामीणों को मिल रहा है, जिस कारण उन्हें प्रत्येक कार्यों के लिए गाँव से शहर की ओर भागना नहीं पड़ता है।

गुरनाम सिंह (आचार्य साहित्य)

नारी शिक्षा का महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा जीवन का आधार है। जहां तक शिक्षा का प्रश्न है यह नारी और पुरुष दोनों के महत्वपूर्ण है। शिक्षा का कार्य तो व्यक्ति के विवेक को जगाकर उसे उचित दिशा प्रदान करना है। शिक्षा सभी का समान रूप से हित-साधन किया करती है, परन्तु फिर भी भारत जैसे विकासशील देश में नारी की शिक्षा का महत्त्व इसलिए अधिक है कि वह देश की भावी पीढ़ी को योग्य बनाने के कार्य में उचित मार्ग-दर्शन कर सकती है। बच्चे सबसे अधिक माताओं के सम्पर्क में रहा करते हैं। माताओं के संस्कारों, व्यवहारों व शिक्षा का प्रभाव बच्चों के मन-मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ता है। शिक्षित माता ही बच्चों के कोमल व उर्बर मन-मस्तिष्क में उन समस्त संस्कारों के बीज बो सकती है जो आगे चलकर अपने समाज, देश और राष्ट्र के उत्थान के लिए परम आवश्यक होते हैं।

नारी का कर्तव्य बच्चों के पालन-पोषण करने के अतिरिक्त अपने घर परिवार की व्यवस्था और संचालन करना भी होता है। एक शिक्षित और विकसित मन मस्तिष्क वाली नारी अपनी आय, परिस्थिति, घर के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता आदि का ध्यान रखकर उचित व्यवस्था का संचालन करती है।

विश्व की प्रगति शिक्षा के बल पर ही चरम सीमा तक पहुंच सकती है। विश्व संघर्ष को जीतने के लिए चरित्र-शस्त्र की आवश्यकता पड़ती है। यदि नारी शिक्षित हो जाए तो उसका पारिवारिक जीवन स्वर्गमय हो सकता है।

आज स्वंय नारी समाज के सामने घर-परिवार, परिवेश-समाज, रीति-नीतियों तथा परम्पराओं के नाम पर जो अनेक तरह की समस्याएं उपस्थित हैं उनका निराकरण नारी शिक्षा से सम्पन्न होकर ही कर सकती है। इन्हीं सब बुराईयों को दूर करने के लिए नारी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। सुशिक्षा के द्वारा नारी जाति समाज में फैली कुरीतियों व कुप्रथाओं को मिटाकर सहज ही निराकरण कर सकती हैं।

रजनी रानी
(एम.ए. हिन्दू अध्ययन)

प्रश्नमञ्जरी

(१) गद्य-गद्य मिश्रित काव्य को कहते हैं-
(क) रूपक (ख) चम्पू (ग) आख्याचिका (घ) भवभूति
(२) 'अमृत लहरी' काव्य में किस की स्तुति की गयी है-
(क) गंगा (ख) यमुना (ग) लक्ष्मी (घ) विष्णु
(३) देवी पुराण में वक्ता ऋषि हैं-
(क) विश्वामित्र (ख) वशिष्ठ (ग) काश्यप (घ) अत्रि
(४) 'दुर्गासप्तशती' किस पुराण के अन्तर्गत है-
(क) देवीभागवत् (ख) स्कन्द पुराण (ग) मार्कण्डेय पुराण (घ) अग्नि पुराण
(४) दुर्गासप्तशती में श्लोक हैं ?
(क) 700 (ख) 667 (ग) 930 (घ)567
(६) दुर्गासप्तशती के प्रवक्ता ऋषि हैं-
(क) दर्वासा (ख) सुरथराजा (ग) समेधा ऋषि (घ) मार्कण्डेय
(७) पुराणों की संख्या है-
(क) 26 (ख)18 (ग) 14 (घ) 20
(८) पुराणों के रचनाकार हैं -
(क) वैशम्पायन (ख) वेदव्यास (ग) विश्वामित्र (घ) कपिलमुनि
(९) रामायण ग्रन्थ के रचनाकार हैं -
(क) महर्षि व्यास (ख) महर्षि वाल्मीकि (ग) तुलसीदास (घ) कपिलमुनि
(१०) यम-नचिकेता संवाद ग्रन्थ में हैं-
(क) केनोपनिषद (ख) छान्दोग्योपनिषद् (ग) कठोपनिषद् (घ) ईशापनिषद्

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(अष्टदशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) मनु (2) बालगंगाधर तिलक (3) महाभारत (4) शालापुर (5) 15
(6) भारवि (7) क्षेमेन्द्र (8) पार्श्वनाथ (9) जगन्नाथ (10) जगन्नाथ

नीति-सूक्तियाँ

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
जातस्यु गण्यते सोऽत्र यः स्फुरेच्च श्रियाधिकः ॥1॥

परिवर्तनशील इस संसार में कौन मरता नहीं और कौन जन्म नहीं लेता ? किन्तु वास्तव में जन्म उसी का सफल माना जाता है, जो अपने कुल की समृद्धि को बढ़ाता है।

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा ॥2॥

अपनी वाणी का वहीं प्रयोग करना चाहिए, जहाँ उसका कुछ फल निकले; जैसे, सफेद कपड़े पर ही रंग खूब पक्का बैठता है।

उद्योगिनं सततमत्र समेति लक्ष्मी-
दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषंमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः ॥3॥

लक्ष्मी सगा उद्योग करने वाले के ही पास आती है। भाग्य की रट तो केवल कापुरुष ही लगाते हैं। अतः भाग्य की बात को छोड़कर अपनी शक्ति के अनुसार ही पुरुषार्थ करो। यदि प्रयत्न करने पर भी कार्य सफल न हो, तो उसमें किसका दोष है ?